विचार बिन्दु

संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है।
–स्वामी शिवानंद

चुनाव की आहट सुनाई देने लगी है!

वैसे तो हमारे देश में नेताओं की मेहरबानी से हर समय ही चुनाव का-सा माहौल बना रहता है, अब जब वास्तव में चुनाव नज़दीक आ रहे हैं तो स्वाभाविक ही है कि नेताओं की गतिविधियां और उन गतिविधियों से हमारा प्रभावित होना बढ गया है। जैसे-जैसे चुनाव नज़दीक आते जाएंगे, यह प्रभाव गहराता जाएगा, और इसके बहुत सारे साइड इफेक्ट्स भी मह महसूस करने लगेंगे। एक समय था जब हमारे नेताओं में, और नागरिकों में भी, यह मर्यादा बोध था कि कहां राजनीति की बात करनी है और कहां नहीं करनी है। मसलन आधिकारिक सरकारी कार्यक्रमों में कोई नेता राजनीति की बात नहीं करता था। वह सरकार की, उसकी नीतियों की बात करता था। अगर कोई नेता किसी अकादमिक संस्थान में बुला भी लिया जाता था, शुरू-शुरू में तो उन्हें वहां मंचस्थ करने के लिए बुलाया ही नहीं जाता था, तो वह वहां वैदुष्य की और उस संस्थान विशेष के संदर्भ में प्रासंगिक बातों तक ही अपने वक्तव्य को सीमित रखता था। लोग भी बेशक राजनीति में दिलचस्पी रखते थे, उसमें यथा रुचि सहभागिता भी करते थे, लेकिन अपने निजी और पारिवारिक जीवन से वे उसे दूर रखते थे। एक ही परिवार में भिन्न-भिन्न राजनीतिक संलग्नता वाले लोग बहुत सद्भावनापूर्वक रहते थे, और यह बात कोई अपवाद नहीं थी। ऐसा भी नहीं है कि वे राजनीतिक मुद्दों पर संवाद नहीं करते थे। संवाद होता था लेकिन वह मुद्दों तक सीमित रहता था और उसमें कटुता की कोई जगह नहीं होती थी। साहित्य की दुनिया में भी वैचारिक भिन्नता खूब रही है। अनेक लेखकों की राजनीतिक संबद्धता भी जग ज़ाहिर रही है। लेकिन इस बात का कोई असर उनके महत्व पर या उनके पारस्परिक रिश्तों पर कभी नहीं पडा। एक मज़ेदार उदाहरण याद करता चलूं। भारत के स्वाधीनता संग्राम को लेकर भगवती चरण वर्मा ने एक उपन्यास लिखा जिसका शीर्षक था – **टेढ़े-मेढ़े रास्ते।** ये टेढ़े-मेढ़े रास्ते वे थे जिन पर चलकर आज़ादी के मुकाम तक पहुंचना था। रांगेय राघव भगवती चरण वर्मा के इस सोच से असहमत थे। और अपनी असहमति को उन्होंने एक उपन्यास लिखकर व्यक्त किया। उपन्यास का शीर्षक था – **सीधा-सादा रास्ता।** कहने की ज़रूरत नहीं कि वे आज़ादी तक पहुंचने का एक ही रास्ता मानते थे। लेकिन पारस्परिक कटुता की बजाय उन्होंने रचनात्मक रूप से अपनी बात कही। साहित्य की दुनिया से ऐसे अनेक उदाहरण याद किए जा सकते हैं। और अगर एक बार फिर से राजनीति की दुनिया में जाना उचित हो तो ऐसे कुछ उदाहरणों को भी याद कर लिया जाना चाहिए जहां एक राजनीतिक दल से संलग्नता वाले व्यक्ति ने किसी अन्य राजनीतिक दल से संबद्ध व्यक्ति को समुचित सम्मान दिया। ऐसे अनेक उदाहरण याद आ जाएंगे।

लेकिन क्या यह मान लिया जाए इस विवेक और सद्भावना का समय अब अतीत हो चुका है? पहले विवेक की बात की जाए। अब हमारे नेता गण इस बात की परवाह नहीं करते हैं और जहां भी उन्हें मौका मिलता है वे राजनीति की शतरंज की बिसात बिछा देते हैं और उस पर शह और मात का खेल खेलना शुरू कर देते हैं। अब उनके मन में विमत, असहमति या प्रमाण, तर्क व तथ्यों के लिए कोई सम्मान नहीं बचा है। वे निहायत ही बेशर्मी से सच को नकारते और मिथ्या तथ्य व तर्क गढते हैं। मुझे याद नहीं आता कि हाल के बरसों में किसी भी नेता ने अपने मिथ्या कथन के लिए क्षमा याचना की हो! उलटे उनके अंध प्रशंसक उनके झूठ को सच साबित करने के लिए ज़मीन आसमान एक करने लग जाते हैं। क्या ऐसा वे बिना अपने नेता की सहमति के करते होंगे? अब एक सोच यह बन गया है हम जो मान या कह या कर रहे हैं वही एकमात्र सत्य है और जो उसे नकारना तो दूर, उस पर कोई मुलायम-सा सवाल भी कर रहा है वह केवल और केवल हमारा शत्रु है। और शत्रु के साथ कैसा बर्ताव किया जाना चाहिए, इसे वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। शत्रु को प्रोत्साहित नहीं किया जाता, उसे तो कुचला जाता है। और कुचलने के रोज़-रोज़ नए तरीके इज़ाद किए जाने लगे हैं। अगर कोई सत्ता में है तो उसके पास तो कुचलने के अनेक औज़ार-हथियार हैं ही, जो सत्ता में नहीं है वह भी यथासामर्थ्य अपने प्रतिपक्षी को ध्वस्त करने की जुगत भिडाता रहता है। चरित्र हनन, बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करना, उन्हें संदर्भ से काट कर प्रस्तुत करना, उपहास करना मीडिया में स्टोरीज़ प्लाण्ट करना जैसे अनेक औज़ार अब सुलभ हो गए हैं और इनका खुलकर उपयोग किया जाता है। दूर से देखकर लगता है कि जो भी राजनीति में हैं उनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है। यह बात अलग है कि जो सत्ता में हैं उनके पास ज़्यादा संसाधन हैं और जो सत्ता में नहीं हैं उनके पास कम लेकिन सत्ता में आने की संभावनाओं के अनुपात में पर्याप्त संसाधन हैं। इधर जैसे-जैसे चुनाव नज़दीक आते जा रहे हैं, इन संसाधनों का उपयोग बढता जा रहा है। अलग-अलग दल रैलियां कर रहे हैं, दल ही नहीं, जातियां और समाज भी रैलियां कर रहे हैं और उन पर पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। जो दल सत्ता में हैं वे अखबारों पर मेहरबान हैं और भर-भरकर अपनी उपलब्धियों का बखान करने वाले विज्ञापनों की हम पाठकों पर बरसात कर रहे हैं। इन दलों की कृपा से अब मुझे अनेक दूरस्थ राज्यों में वहां की सरकारें अपने मतदाताओं पर क्या-क्या कृपा कर रही हैं, इसकी ज़रूरत से ज़्यादा जानकारी होने लगी है। यह जानकारी रोज़ बढती ही जा रही है। शहर में निकलता हूं तो हर चौराहे, नुक्कड़ और खम्भे से मुझे नेताजी दर्शन देने लगते हैं। मैं सोचता हूं, और सोच-सोच कर दु:खी भी होता हूं कि यह जो दिल खोलकर प्रचार हो रहा है, बड़ी-बड़ी रैलियां हो रही हैं, इनका पैसा किसकी जेब से जा रहा है, या बाद में वसूल किया जाएगा!

मैं तो आदर्श स्थिति यह मानता हूं कि आप अपनी बात कहें, मैं उसे सुनूं और जब मैं अपनी बात कहूं तो आप उसे सुनें। एक-दूसरे की बात सुनकर हम अपनी धारणाओं में बदलाव करने को भी तैयार रहें। अगर यह वैचारिक खुलापन हममें आ जाए, तो हम न केवल अपने प्रजातंत्र को मज़बूत करेंगे, अपने समाज को भी एक बेहतर आकृति दें सकेंगे।

इन सबके साथ जो अधिक ख़तरनाक बात हुई है वह यह है कि हम अपनी राजनीतिक संलग्नता, अपने रुझान या अपने सोच को लेकर इतना अधिक असुरक्षित महसूस करने लगे हैं कि जैसे ही हमें लगता है कि कोई हमारे सोच से असहमत है, हम अपना आपा खोकर आक्रामक हो जाते हैं। बहुत बार तो बेचारा सामने वाला असहमत होता भी नहीं है, लेकिन हम अपना आपा खो कर उस पर हमलावर हो चुके होते हैं। इसकी एक परिणति यह हुई है कि हममें संवाद हीनता बढती जा रही है। संवाद का मतलब ही होता है दो तरफा संवाद। अब सुरक्षा इसी में लगती है कि जो सामने वाला कह रहा है उसे आप स्वीकार कर लें। अगर आपने तनिक भी किंतु परंतु की तो हर तरह के अप्रिय और अशालीन हमलों के लिए तैयार रहें। अब आपकी सामान्य विचारधारा भी गाली बना दी गई है। कोई यह नहीं सोचने को तैयार है कि अगर एक व्यक्ति एक ख़ास विचारधारा को पसंद कर सकता है तो दूसरा उससे भिन्न विचारधारा को क्यों नहीं पसंद कर सकता? अब हम रंग वैविध्य को स्वीकार करने को, बहुलता को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। हमारा सारा बल एकरूपता पर है, और एकरूपता भी वह जो हम चाहते हैं। यह बहुत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

मैं हमेशा यह कहता हूं कि एक नागरिक के रूप में हमें राजनीति से दूरी नहीं बरतनी चाहिए। जो राजनीति हमारी पूरी ज़िंदगी को नियंत्रित करने की हद तक प्रभावित करती है, उससे दूरी बरतने का कोई औचित्य ही नहीं है। इसके बावजूद अगर कोई दूरी बरतता है तो इस बात का भी मैं सम्मान करता हूं। लेकिन मूल बात यह है कि चीज़ों को देखने के एकाधिक दृष्टिकोण होते हैं और रहेंगे। किसी का कोई काम अगर आपको पसंद है तो भी मेरे उसको नापसंद करने पर आप असहज न हों। आप उसे पसंद करते रहें और मुझे नापसंद करने दें। मेरे नापसंद करने को आप मेरी निष्ठा, मेरे समर्पण, मेरी देशभक्ति वगैरह से न जोड़ें। सारी अच्छी चीज़ों के ठेकेदार बनकर जो बैठते हैं मैं उनसे कभी सहमत नहीं हो पाता। मैं तो आदर्श स्थिति यह मानता हूं कि आप अपनी बात कहें, मैं उसे सुनूं और जब मैं अपनी बात कहूं तो आप उसे सुनें। एक-दूसरे की बात सुनकर हम अपनी धारणाओं में बदलाव करने को भी तैयार रहें। अगर यह वैचारिक खुलापन हम में आ जाए, तो हम न केवल अपने प्रजातंत्र को मज़बूत करेंगे, अपने समाज को भी एक बेहतर आकृति दें सकेंगे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

डिजिटल अर्थव्यवस्था : विश्वसनीयता एवं संभावनाएं

अविनाश जोशी

आज 'डिजिटल विश्वसनीयता' डिजिटल दुनिया में इस कदर महत्त्वपूर्ण हो चुकी है कि 'डिजिटल विश्वास' को अब एक नई मुद्रा के रूप में देखा जा रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के संसार में पिछले कुछ वर्ष अत्यंत उत्साह और रोमांच से भरे गुजरे हैं। इन वर्षों में हम और अधिक डिजिटल हो गए हैं और दुनिया काफी बदल गई है। आज इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन के हर पहलू में गहरी पैठ बना चुकी है।

आज के डिजिटल युग में हम सोशल मीडिया से लेकर बैंकिंग ऐप जैसी विभिन्न आनलाइन सेवाओं पर भरोसा करते हैं। इसी भरोसे के चलते हम अपनी व्यक्तिगत जानकारी और संवेदनशील डेटा डिजिटल सेवा प्रदाताओं को सौंपते हैं। यह डेटा हमारे पासवर्ड और क्रेडिट कार्ड विवरण से लेकर हमारी व्यक्तिगत पसंदों और 'ब्राउजिंग हिस्ट्री' तक कुछ भी हो सकता है। तकनीकी उन्नति के साथ ही डिजिटल उपकरणों पर हमारी निर्भरता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। उसके साथ ही विश्वसनीय डिजिटल भरोसे की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। डिजिटल भरोसा उन डिजिटल उत्पादों और सेवाओं के प्रति उनके उपयोगकर्ताओं के विश्वास का स्तर है। इसका मतलब है कि जब आप डिजिटल दुनिया में कोई संबंध बनाते हैं, तो आप उस पर पूर्ण रूप से भरोसा करते हैं। यह संबंध आपके और दूसरे व्यक्तियों के बीच विनिमय के रूप में हो सकता है, जो विभिन्न विषयों जैसे कि व्यापार, वित्त, संचार और सामाजिक नेटवर्किंग से संबंधित हो सकते हैं।

डिजिटल विश्वसनीयता उन सभी उपयोगकर्ताओं के लिए जरूरी है, जो डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते हैं, चाहे वे व्यवसायी हों या आम लोग। आज 'डिजिटल भरोसा' डिजिटल दुनिया में इस कदर महत्त्वपूर्ण हो चुका है कि 'डिजिटल विश्वास' को अब एक नई मुद्रा के रूप में देखा जा रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के संसार में पिछले कुछ वर्ष अत्यंत उत्साह और रोमांच से भरे गुजरे हैं। इन वर्षों में हम और अधिक डिजिटल हो गए हैं और दुनिया काफी बदल गई है। आज इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन के हर पहलू में गहरी पैठ बना चुकी है।

आज के डिजिटल युग में हम सोशल मीडिया से लेकर बैंकिंग ऐप जैसी विभिन्न आनलाइन सेवाओं पर भरोसा करते हैं। इसी भरोसे के चलते हम अपनी व्यक्तिगत जानकारी और संवेदनशील डेटा डिजिटल सेवा प्रदाताओं को सौंपते हैं। यह डेटा हमारे पासवर्ड और क्रेडिट कार्ड विवरण से लेकर हमारी व्यक्तिगत पसंदों और 'ब्राउजिंग हिस्ट्री' तक कुछ भी हो सकता है। तकनीकी उन्नति के साथ ही डिजिटल उपकरणों पर हमारी निर्भरता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। उसके साथ ही विश्वसनीय डिजिटल भरोसे की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। डिजिटल भरोसा उन डिजिटल उत्पादों और सेवाओं के प्रति उनके उपयोगकर्ताओं के विश्वास का स्तर है। इसका मतलब है कि जब आप डिजिटल दुनिया में कोई संबंध बनाते हैं, तो आप उस पर पूर्ण रूप से भरोसा करते हैं। यह संबंध आपके और दूसरे व्यक्तियों के बीच विनिमय के रूप में हो सकता है, जो विभिन्न विषयों जैसे कि व्यापार, वित्त, संचार और सामाजिक नेटवर्किंग से संबंधित हो सकते हैं।

डिजिटल विश्वसनीयता उन सभी उपयोगकर्ताओं के लिए जरूरी है, जो डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते हैं, चाहे वे व्यवसायी हों या आम लोग। आज 'डिजिटल भरोसा' डिजिटल दुनिया में इस कदर महत्त्वपूर्ण हो चुका है कि 'डिजिटल विश्वास' को अब एक नई मुद्रा के रूप में देखा जा रहा है। यह डिजिटल आर्थिक प्रणाली के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक सबसे महत्त्वपूर्ण कारक बन चुका है। डिजिटल विश्वास सुरक्षित, विश्वसनीय और संरचित डिजिटल आर्थिक लेनदेन संबंधी जानकारी को संकलित करता है। इसे उपयोगकर्ताओं, निवेशकों और सरकारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण मानक माना जाता है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था एक आर्थिक प्रणाली है जिसमें तकनीकी उपकरण और इंटरनेट का उपयोग करके अर्थतंत्रिक गतिविधियों को संचालित किया जाता है। यह नई तकनीकों और डिजिटली प्रक्रियाओं के माध्यम से वित्तीय सेवाओं, व्यापार, उत्पादन, विपणन आदि में सुधार कर सकती है। यह विभिन्न सेक्टरों में नई संरचनाएँ और तकनीकों का उपयोग करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है, कारोबार की प्रक्रियाएँ सुगम होती हैं और सेवाएं बेहतर होती हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्था में अधिकांश लेन-देन और लेखा-जोखा भी इलेक्ट्रॉनिक रूप से होते हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने डेटा एकत्रित करने और विश्लेषण करने की क्षमता को बढ़ाया है जिससे नीतियों और योजनाओं में सुधार हुआ है। आज के युग में ऑनलाइन व्यापार के माध्यम से व्यापारियों को अधिक ग्राहकों तक पहुंचने का मौका मिलता है। ये नवाचार नए संभावित विकास के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

औद्योगिक तबके के लोग अनेक डिजिटल डेटा और सूचनाओं का उपयोग करते हैं। उन्हें यह भरोसा होना चाहिए कि उनकी सूचनाएं सुरक्षित हैं और इनका गलत इस्तेमाल नहीं होगा। उच्च आय के लोगों के लिए डिजिटल विश्वसनीयता उनकी आर्थिक संरचना में बेहद महत्त्वपूर्ण विषय होता है। उन्हें बैंकिंग संबंधी सेवाओं और उत्पादों के लिए ज्यादा विश्वसनीय डिजिटल प्लेटफार्म की जरूरत होती है, ताकि वे अपनी संपत्ति को सुरक्षित रख सकें और आर्थिक लेनदेन को सही ढंग से कर सकें। यह भरोसा सभी स्तरों पर बनाया जाना जरूरी है। व्यक्तिगत, व्यवसायों और सरकारों के बीच डिजिटल भरोसा बनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जाने चाहिए। इसके लिए डिजिटल विश्व में एक ऐसे शक्तिशाली सुरक्षा ढांचे को बनाया जाना जरूरी है, जो उपयोगकर्ताओं के जीवन और व्यवसाय की सुरक्षा को कायम रख सके।

भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था के युग में प्रवेश तो कर चुका है, लेकिन अभी भी अर्थव्यवस्था का यह नया रूप उम्मीदों के मुताबिक रफ्तार नहीं पकड पाया है। इसका बडा कारण डिजिटल अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए इसके रास्ते में आने वाली बाधाएं हैं। जब तक इन्हें दूर नहीं किया जाएगा, डिजिटल अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से आत्मसात कर पाना संभव नहीं होगा। इसके लिए पहला और महत्त्वपूर्ण उपाय देश, खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों को डिजिटल रूप में साक्षर बनाना होगा और साथ ही डिजिटलीकरण के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का जाल बिछाना होगा।

यदि हम डिजिटल भुगतान उद्योग की ओर देखें तो पाते हैं कि नोटबंदी में भी डिजिटल भुगतान इतनी तेजी से नहीं बढ़ा था, जितना कि कोरोना संकटकाल के दौरान बढ़ा है। देश में डिजिटल भुगतान की स्वीकार्यता बढ़ने लगी है। अर्थव्यवस्था में नकदी की जगह दूसरे माध्यमों से लेनदेन को बढ़ावा देने के भारतीय रिजर्व बैंक के प्रयासों का असर दिखने लगा है। पूर्णबंदी के कारण लोगों ने घरों में रहते हुए ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग को एक तरह से जीवन का अंग बना लिया। अब जब पूर्णबंदी लगभग खत्म हो चुकी है, तब भी लोग भीड़भाड़ से बचने के लिए आनलाइन खरीद को ही तरजीह दे रहे हैं। बर्नस्टीन रिसर्च की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में कोरोनाकाल में लोगों ने जिस तेजी से डिजिटल का रुख किया है, वह भारत के लिए आर्थिक रूप से उपयोगी हो गया है। अनुमान है कि वर्ष 2027-28 तक भारत में ई-कॉमर्स का कारोबार दो सौ अरब डॉलर को पार कर जाएगा।

अब जैसे-जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था डिजिटल होती जा रही है, वैसे-वैसे देश और दुनिया में रोजगार बाजार का परिदृश्य भी बदलता जा रहा है। भविष्य में कई रोजगार ऐसे होंगे, जिनके नाम हमने अब तक सुने भी नहीं हैं। कई शोध संगठनों का कहना है कि डिजिटलीकरण से भारत में रोजगार के नए मौके तेजी से बढ़ रहे हैं। इसमें दुनियाभर में आटोमेशन, रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चलते जहां कई क्षेत्रों में रोजगार कम हो रहे हैं, वहीं डिजिटल अर्थव्यवस्था में रोजगार बढ़ रहे है। आर्थिक विशेषज्ञो के आकलन के अनुसार डिजिटल अर्थव्यवस्था 2026 में भारत की जीडीपी में 20 प्रतिशत से अधिक का योगदान दे सकती है। भारत तेजी से टेक्नोलॉजी को अपना रहा है और इसने कुछ वर्षों में ही लोगों के जीवन, शासन और लोकतंत्र को बदल दिया है।

भारत में टेक्नोलॉजी ने न केवल इनोवेशन को बढ़ावा दिया है, बल्कि वास्तविक समाधान देने का भी काम किया है। टेक्नोलॉजी ने पिछले कुछ वर्षों में लोगों के जीवन, शासन और लोकतंत्र को बदल दिया है। देश की डिजिटल अर्थव्यवस्था में वर्ष 2025 तक एक ट्रिलियन डॉलर (करीब 70 लाख करोड़ रुपये) के स्तर पर पहुंचने की क्षमता है। सरकार ने भी महसूस किया है कि भारत 2025 तक डिजिटल अर्थव्यवस्था के जरिए एक ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक मूल्य बना सकता है।

भारत अगर आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र के साथ शिक्षा, ऊर्जा, वित्त, स्वास्थ्य, लॉजिस्टिक और परिवहन जैसे अन्य क्षेत्रों में भी डिजिटल अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को उजागर करता है तो इससे हमारी डिजिटल अर्थव्यवस्था एक ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकती है। डिजिटल आर्थिक लेनदेन बढ़ने के साथ ही इससे जुड़ी समस्याएं भी तेजी से उभर रही हैं। साइबर अपराधों, डेटा चोरी, आनलाइन धोखाधड़ी और पहचान चोरी जैसी समस्याएं डिजिटल विश्वास को पीछे धकेल रही हैं। साइबर आक्रमणकारी आपकी निजी जानकारी को नुकसान पहुंचा सकता है, आपके खाते को हैक और अन्य अवांछित क्रियाएं कर सकता है, जो डिजिटल विश्वास को खंडित कर सकता है।

डिजिटल भरोसे को इन खतरों से कैसे बचाया जा सकता है, इस पर विचार करना आवश्यक है। डिजिटल विश्व में विश्वसनीयता का निर्माण एक संवेदनशील विषय है, जो आज के समय में बढ़ती डिजिटल उपस्थिति के साथ और भी महत्त्वपूर्ण हो रहा है। स्थायी और उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल उपस्थिति बनाने के लिए विश्वसनीय डिजिटल भरोसा जरूरी है। विभिन्न तबकों के लोगों के लिए विश्वसनीय डिजिटल विश्वास की आवश्यकता अलग-अलग हो सकती है। व्यापार क्षेत्र में संचार, सौदों की पुष्टि, धोखाधड़ी से बचाव और उत्पादों या सेवाओं की गुणवत्ता पर भरोसा जरूरी होता है। भारत सरकार ने डिजिटल भारत की शुरुआत की है, जिसकी सफलता के लिए आम जन का सहयोग विश्वास एवम जुड़ाव बहुत महत्वपूर्ण है।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

'शहीद और उनके परिवारों का सम्मान करना हमारा दायित्व है'

- डीडवाना खाखोली में शहीद भींवाराम भाकर की मूर्ति का अनावरण हुआ
- पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने मूर्ति का अनावरण किया

डीडवाना, (निसं)। जिले के ग्राम खाखोली में शहीद कमांडो भींवाराम भाकर की मूर्ति का समारोहपूर्वक अनावरण हुआ। इस मौके पर पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत कर शहीद की मूर्ति का अनावरण किया।

साथ ही शहीद को नमन करते हुए कहा कि शहीद भींवाराम जैसे सपूत देश की खातिर अपना बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटते। शहीदों के प्रति उनके मन में इस कदर श्रद्धा और सम्मान है कि वे अपनी अस्वथता के बावजूद यहां पहुंचे हैं। मलिक ने कहा कि सिपाहियों और शहीद देश के दुश्मनों से लोहा लेते हैं, तभी हम लोग आराम और सुख चैन से रह पाते हैं। इसलिए ऐसे शहीद और उनके परिवारों का सम्मान करना हमारा दायित्व है। साथ ही उन्होंने किसान परिवारों से अपनी बेटियों को दहेज देने की बजाय उच्च शिक्षा दिलाने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के बल पर ही किसान समाज के बेटे और बेटियां जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अनावरण समारोह में मौजूद डीडवाना विधायक चेतन डूडी ने कहा कि शहीद भींवाराम खाखोली गांव के लिए गौरव है। गांव के युवाओं को शहीद भींवाराम से देश भक्ति की प्रेरणा लेनी चाहिए। वहीं लाडनूं विधायक मुकेश भाकर ने कहा कि सैनिक हमेशा किसान परिवार से होता है। शहीद कभी मरता नहीं, बल्कि हमेशा के लिए हो जाते हैं, इसलिए लोगों को शहीदों का सम्मान करना चाहिए। जबकि मौलासर के पूर्व प्रधान जालाराम भाकर ने शहीद के जीवन और शहादत की विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर शहीद के परिजनों का भी सम्मान किया गया। अनावरण कार्यक्रम में कांग्रेस जिलाध्यक्ष जाकिर हुसैन गैसावत, राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष निर्मल चौधरी, मौलासर प्रधान मंजूदेवी, पूर्व प्रधान गुलाराम ढाका, पूर्व प्रधान भगवानराम बुरड़क सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

ग्राम खाखोली में शहीद कमांडो भींवाराम भाकर की मूर्ति का अनावरण पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने अनावरण किया।

सांभर में गांधी बालबाड़ी के सौंदर्यीकरण का काम अधूरा पड़ा है

- चारदीवारी पर भित्ति चित्र उकरने की योजना नहीं हो सकी साकार
- देखरेख व असामाजिक तत्वों की वजह से ढाई साल से फव्वारा भी बना है शोपीस

सांभरझील, (निसं)। यहां कटला बाजार स्थित गांधी बालबाड़ी का तीन साल बाद भी सौंदर्यकरण का काम अधूरा पड़ा है। पार्क की शोभा बढ़ाने के लिए लगाया गया फव्वारा कुछ समय तो लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा लेकिन बाद में देखरेख व असामाजिक तत्वों की वजह से आज यह पूरी तरह से नकारा पड़ा हुआ है।

फव्वारे की खूबसूरती में चार चांद लगाने के लिए इसके चारों ओर लगाई गई स्टील की जालियों के बाद भी किसी ने अंदर से इसका नोजल खोलकर निकाल लिया है, करीब ढाई साल से यह फव्वारा अब शॉपीस बना हुआ है। फव्वारे के अंदर बारिश का पानी भरा हुआ है जो सडांध मार रहा है जिसे निकालने के लिए कोई कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, पानी में काई जम गई है और मच्छर भी भिनभिना रहे हैं।

पार्क को विकसित करने के लिए खर्च की गई धनराशि का कोई औचित्य नहीं निकल रहा है। पार्क की चारदिवारी का रंग रोगन आज तक नहीं हुआ है। चारदीवारी के बाहर भित्ति चित्रों को उकेरने की योजना आज भी अधूरी पड़ी है। गांधी बालवाड़ी के दोनों द्वारों पर लगाई गई अर्द्ध चंद्राकार लोहे की जाली टूटी पड़ी है। पार्क में नीम और वटवृक्ष के चारों ओर बनाये गये गट्टे पर लगाई गई ब्लैक टाइल्स अनेक जगह से धीरे-धीरे उखड़ रही हैं।

इससे गुणवत्ता पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। सेंट्रल बैंक और पुरानी तहसील के पास स्थित यह गांधी बालबाड़ी आबादी के मध्य में स्थित है आसपास के लोग यहां आते हैं। पार्क में दो मंदिर भी है जहां पूजा स्नान करने के लिए भी श्रद्धालु सुबह शाम आते हैं।

आंधी की वजह से क्षतिग्रस्त हुए एक पेड़ की डाली आज भी झूल रही है। पार्क में सांसद कोटे से लगी जिम की देखरेख भी करने वाला कोई नहीं है, कुछ के पाट्र्स खराब भी हो चुके हैं। पार्षद धर्मेंद्र जोपट ने बताया कि उनके पिछली दफा इस वार्ड से पार्षद रहते हुए इस पार्क को डवलप करवाया गया था, लेकिन कुछ काम आज भी अधूरे ही पड़े है, अनेक दफा मेरी ओर से पालिका प्रशासन को भी लिखा गया और कई दफा मौखिक भी बोला गया लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं देने से विकसित करने के लिए पूर्व में खर्च किये गये बजट का कोई सार्थक परिणाम नहीं निकल पा रहा है, इससे लोगों की भावनाएं भी आहत हो रही हैं।

पार्क की शोभा बढ़ाने के लिए लगाया गया फव्वारा पूरी तरह से नकारा पड़ा हुआ है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 4 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, अश्विनी नक्षत्र प्रात: 9:27 तक, ध्रुव योग रात्रि 10:58 तक, तैतिल करण सांय 4:42 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

कुमार योग सूर्योदय से दिन 9:23 तक है। ज्वालामुखी योग दिन 9:27 से सांय 4:42 तक है। आज गुरू वक्री सांय 7:70 पर होगा। शुक्र मार्गी प्रात: 6:50 पर होगा। आज चान्द छठ व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:45 तक, शुभ 9:18 से 10:52 तक, चर 2:00 से 3:33 तक, लाभ-अमृत 3:33 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:11, सूर्यास्त 6:41

मेष

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है। पारिवारिक कारणों से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन

व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।